ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 1, January 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मीडिया और भारतीय राजनीति : भूमिका, प्रभाव और दुरुपयोग

श्रीमती पूनम दत्ता
सह–आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय, श्रीकरणपुर

सारांश

वर्तमान समय में मीडिया भारतीय राजनीति का एक अनिवार्य एवं प्रभावशाली अंग बन चुका है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया तीनों ने न केवल राजनीतिक सूचना के प्रवाह को तेज़ किया है, बल्कि जनता की राजनीतिक चेतना, जनमत निर्माण और चुनावी व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित किया है। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है, क्योंकि यह सरकार और नागरिक के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है। तथापि, मीडिया के बढ़ते व्यावसायीकरण, TRP प्रतिस्पर्धा, कॉर्पोरेट दबाव, फेक न्यूज़ और राजनीतिक एजेंडा–निर्माण जैसी प्रवृत्तियों ने इसके दुरुपयोग की स्थितियाँ भी बढ़ाई हैं। मीडिया अब सूचना का माध्यम होने के साथ–साथ राजनीतिक अभियान, प्रचार–प्रसार, छवि–निर्माण और विपक्ष पर प्रहार का एक शक्तिशाली उपकरण बन चुका है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय राजनीति में मीडिया की भूमिका, उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव, मीडिया–राजनीति संबंधों की प्रकृति, मीडिया स्वामित्व के प्रश्न, सोशल मीडिया का उभार, तथा फेक न्यूज़ व प्रोपेगेंडा जैसे दुरुपयोग के पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मीडिया लोकतंत्र को सशक्त भी करता है और कमजोर भी– इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि मीडिया सूचना कितनी निष्पक्ष, नैतिक और तथ्य–आधारित है। अंतिम रूप से शोध यह सुझाव देता है कि भारतीय लोकतंत्र की मजबूती के लिए मीडिया की स्वतंत्रता के साथ–साथ मीडिया–नैतिकता, जवाबदेही और जन–हित आधारित पत्रकारिता की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्दः मीडिया, भारतीय राजनीति, जनमत निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया, मीडिया नैतिकता, फेक न्यूज़, प्रोपेगेंडा, राजनीतिक संचार, लोकतंत्र, चुनावी प्रचार, मीडिया दुरुपयोग, कॉर्पोरेट नियंत्रण, पेड न्यूज़, सूचना तंत्र

प्रस्तावना

मीडिया आधुनिक लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है, क्योंकि यह नागरिकों और शासन–व्यवस्था के बीच एक अनिवार्य सेतु का कार्य करता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में मीडिया की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जहाँ जनता के राजनीतिक निर्णय, जागरूकता और भागीदारी बड़े पैमाने पर मीडिया के माध्यम से ही निर्मित होती है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हाल के वर्षों में सोशल मीडिया इन तीनों ने राजनीतिक सूचना के प्रसार में तीव्रता, पहुँच और प्रभाव को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया है।

राजनीतिक दल चुनावी अभियानों, जनमत निर्माण, छवि–निर्माण और विचारधारा के प्रसार में मीडिया का भरपूर उपयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मीडिया भारतीय राजनीति का केंद्रबिंदु बन चुका है।

हालाँकि, मीडिया की यह बढ़ती शक्ति केवल सकारात्मक ही नहीं है; इसके साथ कई गंभीर चुनौतियाँ भी उभरी हैं। व्यावसायीकरण, TRP की दौड़, कॉर्पोरेट स्वामित्व, राजनीतिक दबाव, पेड न्यूज़, फेक न्यूज़, और डिजिटल प्रोपेगेंडा जैसी समस्याओं ने मीडिया की विश्वसनीयता और लोकतांत्रिक दायित्व पर प्रश्नचिह्न खड़े किए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने सूचना को लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन इसके साथ गलत सूचना, अफवाह फैलाने और जनमत को प्रभावित करने के खतरनाक साधन भी उपलब्ध हो गए हैं। मीडिया अब केवल सूचना देने वाला तटस्थ माध्यम नहीं रहा, बल्कि कई बार विचारों को आकार देने और राजनीतिक हितों को साधने का उपकरण बनता दिखाई देता है।

ऐसी स्थिति में यह समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि मीडिया भारतीय राजनीति में कैसे कार्य करता है, इसका प्रभाव जनता और लोकतंत्र पर किस प्रकार पड़ता है, और इसके दुरुपयोग की स्थितियाँ कैसे और क्यों उत्पन्न होती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी उद्देश्य से मीडिया की भूमिका, प्रभाव और दुरुपयोग के बहुआयामी पहलुओं का विश्लेषण करता है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि भारतीय लोकतंत्र की मजबूती के लिए मीडिया की स्वतंत्रता, नैतिकता और जवाबदेही कितनी आवश्यक है।

मीडिया का सैद्धांतिक आधार

मीडिया की कार्यप्रणाली, प्रभाव और व्यवहार को समझने के लिए अनेक संचार सिद्धांत विकसित किए गए हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि मीडिया समाज और राजनीति में क्या भूमिका निभाता है तथा सूचना जनमानस को कैसे प्रभावित करती है। मीडिया का सबसे प्रमुख सिद्धांत एजेंडा–सेटिंग सिद्धांत (Agenda Setting Theory) है, जिसके अनुसार मीडिया यह निर्धारित करता है कि जनता किन मुद्दों पर सोचें और किस विषय को कितना महत्त्व दें। यानी मीडिया घटनाओं को नहीं, बल्कि उन घटनाओं की महत्ता को नियंत्रित करता है। भारतीय राजनीति में यह सिद्धांत विशेष रूप से लागू होता है, क्योंकि चुनावी समय में मीडिया द्वारा उभारे गए मुद्दे ही अक्सर राष्ट्रीय बहस का केंद्र बन जाते हैं।

इसके साथ ही फ्रेमिंग सिद्धांत (Framing Theory) यह समझाता है कि मीडिया केवल सूचना प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे एक विशेष ढाँचे, दृष्टिकोण या नैरेटिव के साथ प्रस्तुत करता है, जिससे जनता की भावनाएँ, दृष्टिकोण और राजनीतिक मान्यताएँ प्रभावित होती हैं। किसी नेता, पार्टी या घटना को सकारात्मक या नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करना जनता की राय को गहराई से प्रभावित करता है।

स्पाइरल ऑफ साइलेंस सिद्धांत यह बताता है कि मीडिया द्वारा किसी एक विचारधारा को अधिक महत्व देने से विपरीत विचार रखने वाले लोग अपने मत को व्यक्त करने से डरने लगते हैं, जिससे एक मनोवैज्ञानिक दबाव बनता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से सोशल मीडिया के संदर्भ में और अधिक प्रासंगिक हो गया है, जहाँ ट्रोलिंग और सार्वजनिक आलोचना से बचने के लिए लोग चुप्पी साध लेते हैं।

मीडिया निर्भरता सिद्धांत दर्शाता है कि सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के लिए जनता मीडिया पर अत्यधिक निर्भर हो गई है, और यह निर्भरता तब और बढ़ जाती है जब समाज तकनीकी और आर्थिक रूप से परिवर्तनशील होता है। भारत में डिजिटल मीडिया और मोबाइल इंटरनेट के विस्तार के साथ यह निर्भरता कई गुना बढ़ी है, जिसने राजनीतिक सूचना के प्रवाह को बहुत तीव्र और प्रभावकारी बना दिया है।

डिजिटल युग में नेटवर्क सोसाइटी सिद्धांत और डिजिटल पब्लिक स्फीयर की अवधारणा भी महत्वपूर्ण हो गई है, जो यह दर्शाती है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म नागरिकों के लिए एक नया सार्वजनिक मंच बन गए हैं, जहाँ राजनीतिक विमर्श, बहस, अभियान और विरोध आंदोलनों का नया स्वरूप उभर रहा है।

समग्र रूप से, इन सिद्धांतों से स्पष्ट होता है कि मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं है बल्कि एक शक्तिशाली संरचना है, जो राजनीति और समाज दोनों पर गहरा प्रभाव डालती है। इस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के माध्यम से मीडिया की भूमिका, प्रभाव और दुरुपयोग को समझना और विश्लेषित करना अधिक वैज्ञानिक और विश्वसनीय हो जाता है।

भारतीय राजनीति में मीडिया की भूमिका

मीडिया भारतीय राजनीति का एक केंद्रीय घटक बन चुका है, जिसने राजनीतिक प्रक्रियाओं, चुनावी रणनीतियों, जनमत निर्माण और राजनीतिक संचार को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में मीडिया जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करता है, जहाँ सूचना का प्रवाह नागरिकों को अपने राजनीतिक अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाता है। मीडिया राजनीतिक दलों, नेताओं और सरकारों की गतिविधियों, नीतियों और वक्तव्यों को जनता तक पहुँचाता है, जिससे लोकतांत्रिक जवाबदेही को मजबूती मिलती है। विशेषकर चुनावों के समय मीडिया की भूमिका अत्यधिक सक्रिय हो जाती है, जहाँ वह चुनावी मुद्दों को उभारता है, जनमत सर्वेक्षण प्रस्तुत करता है और बहसों के माध्यम से राजनीतिक वातावरण को आकार देता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विशेष रूप से टीवी न्यूज़ चौनल, राजनीतिक वाद–विवाद, प्रेस कॉन्फ्रेंस, इंटरव्यू और रिपोर्टिंग के माध्यम से राजनीतिक घटनाओं को तत्काल जनता तक पहुँचाते हैं। इससे राजनीतिक घटनाओं की पारदर्शिता बढ़ती है और जनता अपने निर्णय अधिक सूचित तरीके से ले पाती है। प्रिंट मीडिया अभी भी ग्रामीण भारत में विश्वसनीय सूचना का प्रमुख स्रोत है, जो गहन विश्लेषण और तथ्यात्मक रिपोर्टिंग के माध्यम से राजनीतिक समझ को समृद्ध करता है।

सोशल मीडिया ने भारतीय राजनीति की प्रकृति को बिल्कुल नया आयाम दिया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म राजनीतिक दलों, नेताओं और नागरिकों के लिए संवाद का नया माध्यम बन गए हैं। राजनीतिक दल अब डिजिटल अभियान चलाते हैं, डेटा विश्लेषण का उपयोग करते हैं और "डिजिटल इमेज–बिल्डिंग" का सहारा लेते हैं। यह परिवर्तन राजनीति को अधिक तेज़, सीधा और जन–भागीदारी आधारित बनाता है।

मीडिया न केवल राजनीतिक जानकारी देता है बल्कि जनमत निर्माण (Opinion Formation) में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया किन मुद्दों को प्राथमिकता देता है,

कौन–सी खबरें ज़्यादा दिखाता है, किस नेता को किस रूप में प्रस्तुत करता है– इससे जनता की राजनीतिक समझ और भावनात्मक दृष्टिकोण प्रभावित होते हैं। मीडिया कई बार सार्वजनिक विमर्श (Public Discourse) को दिशा देता है, जिससे वह राजनीतिक निर्णयों और नीतियों को अप्रत्यक्ष रूप से आकार देता है।

इसके अतिरिक्त मीडिया "वॉचडॉग" की भूमिका भी निभाता है, जिसके माध्यम से भ्रष्टाचार, घोटालों, सत्ता दुरुपयोग और प्रशासनिक अनियमितताओं को उजागर किया जाता है। 2G घोटाला, कॉमनवेल्थ गेम्स, विमुद्रीकरण पर बहस, किसान आंदोलन, महिला सुरक्षा से जुड़े मामले–इनकी राष्ट्रीय चर्चा में मीडिया की भूमिका निर्णायक रही है।

समग्र रूप से देखा जाए तो मीडिया राजनीति को अधिक पारदर्शी, जागरूक, जुड़ा हुआ और प्रतिस्पर्धात्मक बनाता है। लेकिन यही शक्ति यह भी दर्शाती है कि मीडिया में संतुलित, निष्पक्ष और नैतिक रिपोर्टिंग कितनी आवश्यक है, क्योंकि राजनीतिक विमर्श का बड़ा हिस्सा मीडिया के नियंत्रण में रहता है।

मीडिया का भारतीय राजनीति पर सकारात्मक प्रभाव

मीडिया ने भारतीय राजनीति में कई सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं, जिनके कारण लोकतंत्र अधिक खुला, पारदर्शी और उत्तरदायी बना है। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि मीडिया ने राजनीति को जनता के अधिक निकट ला दिया है। राजनीतिक घटनाओं, सरकारी नीतियों और नेताओं की गतिविधियों को मीडिया निरंतर जनता तक पहुँचाता है, जिससे नागरिकों की राजनीतिक जागरूकता बढ़ती है। इस जागरूकता का सीधा प्रभाव राजनीतिक भागीदारी पर पड़ता है, क्योंकि सूचित नागरिक चुनावों में अधिक सक्रिय होते हैं और शासन से बेहतर प्रदर्शन की अपेक्षा रखते हैं।

इसके अलावा, मीडिया लोकतंत्र के वॉचडॉग के रूप में सत्ता की निगरानी करता है। यह घोटालों, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक लापरवाही और अधिकारों के दुरुपयोग को उजागर करके सरकारों को जवाबदेह बनाता है। 2G स्पेक्ट्रम घोटाला, कोल ब्लॉक आवंटन विवाद, निर्भया मामला और कई सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों में मीडिया की सक्रिय भूमिका ने जनता की आवाज़ को राष्ट्रीय मंच दिया। इसने सरकारों को सुधारात्मक कदम उठाने के लिए बाध्य किया, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करता है।

मीडिया ने सामाजिक मुद्दोंकृजैसे महिला सुरक्षा, दलित अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य को व्यापक महत्व देकर राजनीतिक एजेंडा–सेटिंग में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई बार मीडिया के माध्यम से उपजे जन–दबाव के कारण सरकारों को महत्वपूर्ण नीतियाँ लानी पड़ीं या पुराने कानूनों में सुधार करना पड़ा।

सोशल मीडिया ने राजनीतिक संवाद को लोकतांत्रिक बनाते हुए आम नागरिकों को भी आवाज़ दी है। अब केवल राजनेता ही नहीं, बल्कि सामान्य लोग भी अपनी बात सीधे सार्वजनिक मंच पर रख सकते हैं, जिससे राजनीतिक संवाद अधिक बहुपक्षीय और समावेशी हुआ है। इससे युवाओं की राजनीति में सहभागिता बढ़ी है और कई सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों को मजबूत आधार मिला है–जैसे भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, किसान आंदोलन, या नागरिक अधिकारों से जुड़े अभियान।

मीडिया का एक और सकारात्मक योगदान पारदर्शिता और प्रभावी शासन में है। ई–गवर्नेंस, जन–धन योजनाएँ, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, सरकारी पोर्टलों की सतत निगरानी और मीडिया रिपोर्टिंग के कारण शासन की कई प्रक्रियाएँ अधिक पारदर्शी हुई हैं। यह राजनीति में भ्रष्टाचार को कम करने और प्रशासन की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायक रहा।

समग्र रूप से मीडिया ने भारतीय राजनीति को अधिक जागरूक, पारदर्शी, सहभागी और गतिशील बनाया है। यह आम नागरिकों और सरकार के बीच संवाद को सुगम बनाता है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मीडिया का नकारात्मक प्रभाव एवं दुरुपयोग

जहाँ मीडिया भारतीय राजनीति का एक आवश्यक और प्रभावशाली माध्यम है, वहीं इसके दुरुपयोग और नकारात्मक प्रभावों ने लोकतंत्र को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करने के लिए विवश किया है। मीडिया का सबसे प्रमुख नकारात्मक पहलू पेड न्यूज़ और पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग है। कई मीडिया संस्थान आर्थिक लाभ, राजनीतिक दबाव या कॉर्पोरेट हितों के कारण समाचारों को एकतरफा और पक्षपातपूर्ण रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे जनता तक वास्तविक सूचना नहीं पहुंच पाती। यह प्रवृत्ति न केवल लोकतांत्रिक बहस को विकृत करती है बल्कि जनता की राजनीतिक समझ को भी भ्रमित करती है।

सोशल मीडिया के विस्तार के साथ फेक न्यूज़, अफवाहों और डिजिटल प्रोपेगेंडा का प्रसार एक गंभीर समस्या बन गया है। गलत या मनगढंत सूचनाएँ तेजी से वायरल होती हैं, जो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक तनाव को बढ़ा सकती हैं। चुनावी समय में ऐसी सूचनाएँ जनमत को प्रभावित करती हैं और राजनीतिक निर्णयों पर सीधा असर डालती हैं। डेटा एनालिटिक्स, बॉट्स और माइक्रो–टार्गेटिंग तकनीकों ने भी राजनीतिक विज्ञापन को अधिक आक्रामक और कभी–कभी छुपा हुआ बना दिया है।

TRP आधारित सनसनीखेज पत्रकारिता मीडिया के दुरुपयोग का एक और बड़ा पहलू है। कई चौनल TRP की दौड़ में तथ्यों को द्वितीय स्थान पर रखकर नाटकीय, भावनात्मक और भड़काऊ खबरें प्रस्तुत करते हैं, जिससे समाज में अनावश्यक भय, तनाव और भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह प्रवृत्ति राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ाती है और स्वस्थ लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करती है।

मीडिया स्वामित्व पर कॉर्पोरेट नियंत्रण भी एक गंभीर चिंता का विषय है। बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा मीडिया संस्थानों का स्वामित्व रखने के कारण समाचारों में व्यावसायिक हित प्रमुख हो जाते हैं, जिससे स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता प्रभावित होती है। राजनीतिक दल और बड़े कारोबारी समूह मिलकर मीडिया पर दबाव बनाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई महत्वपूर्ण मुद्दे दबा दिए जाते हैं और कुछ मामलों को अनावश्यक रूप से उभारा जाता है।

सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग, हेट स्पीच और साइबर बुलिंग ने राजनीतिक विमर्श को और अधिक विषाक्त बनाया है। इससे न केवल नागरिकों की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता प्रभावित होती है, बल्कि पत्रकारों, कार्यकर्ताओं और स्वतंत्र विचारधाराओं के लिए भी असुरक्षित वातावरण बनता है। यह लोकतंत्र के लिए अत्यंत खतरे की स्थिति है, क्योंकि भय, धमकी और झूठ के आधार पर राजनीति का संचालन स्वस्थ और नैतिक नहीं हो सकता।

समग्र रूप से मीडिया के दुरुपयोग ने भारतीय राजनीति में पारदर्शिता, निष्पक्षता और तर्कसंगत बहस की गुणवत्ता को कमजोर किया है। यदि मीडिया नैतिकता, तथ्यात्मकता और सार्वजनिक हित को प्राथमिकता न दे, तो लोकतंत्र में असंतुलन और गलत निर्णयों का जोखिम बढ़ जाता है। अतः मीडिया की स्वतंत्रता जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है उसका जिम्मेदार, संतुलित और सत्य आधारित उपयोग।

निष्कर्ष

मीडिया और भारतीय राजनीति का संबंध अत्यंत गहरा और परिवर्तनशील है, जिसने लोकतंत्र की दिशा और स्वरूप दोनों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। मीडिया ने राजनीति को जनता के अधिक निकट लाकर जागरूकता, पारदर्शिता और सहभागिता को सशक्त बनाया है। प्रिंट मीडिया से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और अब सोशल मीडिया तककृसूचना प्रसार के प्रत्येक माध्यम ने राजनीतिक संचार को अधिक गतिशील, सक्रिय और बहुआयामी बनाया है। विभिन्न घोटालों के खुलासे, सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता देना, सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करना तथा नागरिकों की आवाज़ को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचानाकृये सभी मीडिया के सकारात्मक योगदान हैं, जिन्होंने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत आधार प्रदान किया है।

लेकिन वहीं दूसरी ओर मीडिया के दुरुपयोग ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को गंभीर चुनौतियों के सामने खड़ा किया है। पेड न्यूज़, पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग, फेक न्यूज़, सनसनीखेज पत्रकारिता, कॉर्पोरेट नियंत्रण और डिजिटल प्रोपेगेंडा जैसी प्रवृत्तियों ने मीडिया की विश्वसनीयता को क्षति पहुँचाई है। सोशल मीडिया ने लोकतांत्रिक संवाद को व्यापक बनाया है, परंतु इसके साथ गलत सूचना, ट्रोलिंग और राजनीतिक ध्रुवीकरण भी बढ़ा है। इन समस्याओं ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को विकृत किया है और लोकतंत्र की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डाला है।

इसलिए आवश्यक है कि मीडिया की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखते हुए उसके दुरुपयोग पर नियंत्रण के लिए ठोस नीतियाँ, विनियमन और मीडिया–नैतिकता को मजबूत किया जाए। पत्रकारिता में तथ्यपरकता, निष्पक्षता, उत्तरदायित्व और सामाजिक संवेदना को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथ ही, नागरिकों में भी मीडिया साक्षरता (Media Literacy) बढ़ाना आवश्यक है, ताकि वे तथ्य और भ्रम के बीच अंतर कर सकें।

समग्र रूप से कहा जाए तो मीडिया भारतीय लोकतंत्र का एक शक्तिशाली स्तम्भ हैकृयह लोकतंत्र को सशक्त भी बनाता है और कमजोर भी कर सकता है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि मीडिया का उपयोग कितना नैतिक, जिम्मेदार और जनहित में किया जाता है। जब मीडिया सत्य, पारदर्शिता और सार्वजनिक हित का पालन करता है, तब वह लोकतंत्र की आत्मा को मजबूती प्रदान करता है; और जब वह दुरुपयोग का साधन बनता है, तो लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न करता है। अतः एक समृद्ध, स्वस्थ और संतुलित लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार मीडिया का होना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, विनोद. भारतीय जनसंचार माध्यम। नई दिल्ली : सौरभ प्रकाशन, 2008.
2. कुशवाहा, मदन मोहन. मीडिया और लोकतंत्र। दिल्ली : अरिहंत पब्लिकेशन, 2010.
3. शर्मा, के. एल. भारतीय राजनीति और संचार माध्यम। जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2006.
4. जैन, अरुण. "भारतीय राजनीति में मीडिया की बदलती भूमिका।" समकालीन अध्ययन, खंड 9, अंक 2, 2009, पृ. 41–55.
5. तिवारी, सुधीर. मीडिया, राजनीति और जनमत। वाराणसी : ज्ञानमंडल, 2005.
6. गौतम, सुरेश. "संचार माध्यम और राजनीतिक भागीदारी।" जन संचार समीक्षा, खंड 7, अंक 4, 2011, पृ. 28–42.
7. किशोर, संतोष. भारत में पत्रकारिता के बदलते आयाम। दिल्ली : साहित्य भवन, 2003.
8. दत्त, राममोहन. भारतीय पत्रकारिता का इतिहास। पटना : विद्यार्थी प्रकाशन, 1998.